

# निर्विघ्न जीवन



मानव जीवन सभी प्राणियों में श्रेष्ठ जीवन है। उनमें भी सर्वश्रेष्ठ वे हैं जिनका जीवन सरल, सुख-शांति व प्रेम से युक्त तथा निर्विघ्न है। हम कलियुग की गहन रात्रि में रह रहे हैं, यहां ठोकरें लगना भी सम्भव है और अनेक अनचाहे विघ्न भी रास्ता रोक सकते हैं। परन्तु ईश्वरीय ज्ञान के बल से सहज ही विघ्नों को पार करना सीखना है। स्वयं को इतना सरलचित्त व शक्तिशाली बनाना है जो हर बात विघ्न प्रतीत न हो।

कभी विघ्न मनुष्यों की ओर से आते हैं तो कभी सरकार की ओर से। कभी व्याधियां विघ्न रूप बन जाती हैं तो कभी धन का अभाव। कभी असफलता विघ्न खड़े कर देती है तो कभी अपने ही संस्कार। परन्तु बीज रूप में यों कहें कि मनुष्य के अपने पूर्व के संचित विकर्म ही विघ्नों के ज्यादा जिम्मेदार है।

भगवानुवाच याद रखें - जो आत्माएँ मास्टर सर्वशक्तिवान के नशे में रहती हैं, विघ्न-समस्याएँ उनके पास आ नहीं सकती। वास्तव में जब हम साधारण संकल्पों में रहते हैं तो हम समस्याओं का निर्माण करते हैं। भगवानुवाच है कि समस्याएँ और कुछ भी नहीं कमजोर मन की रचना है। उदाहरण लें एक व्यक्ति दूसरे को अपशब्द कह रहा है परन्तु दूसरा भी मुस्करा कर आगे बढ़ जाता है, बात वहीं खत्म हो जाती है, परन्तु यदि उसे भी क्रोध आ जाए और झगड़ा हो जाए तो समस्या विकराल रूप ले लेती है।

मास्टर सर्वशक्तिवान के स्वमान में रहने से हमारी शक्तियां जागृत रहती हैं और हमसे चारों ओर शक्तियों की किरणें फैलती रहती हैं जो विघ्न को नष्ट कर देती हैं। इसलिए उठते ही 21 बार याद करना चाहिए कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और विघ्न विनाशक हूँ। इससे जीवन से अनेक समस्याएँ नष्ट होती रहेगी। और साथ में यह भी स्वमान या वरदान याद कर लें कि सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है तो सफलता के द्वार खुल जायेंगे।

निर्विघ्न जीवन जीने के कुछ सूत्र हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। कभी भी दूसरों के जीवन में विघ्न न डालें। प्रायः विघ्न डालने वाले को इसका एहसास नहीं होता। वह अपने व्यवहार को कॉमन व आवश्यक मानता है। परन्तु कटु वचन बोलकर, अपमान करके, तन्त्र-मंत्र के द्वारा दूसरों को हानि पहुंचाकर, व्यर्थ में बदनाम करके, झूठे आरोप लगाकर, सदा विरोध करके व झूठे केस करके दूसरों के जीवन में विघ्न डालना -यह यद्यपि कलियुग की पहचान है, परन्तु हमें ये सब नहीं करना है। याद रखें - जो व्यवहार हम दूसरों से करते हैं वही व्यवहार हमें अवश्य ही प्राप्त होता है - यह सृष्टि का अविनाशी सिद्धांत है। किसी भी तरह यदि हम दूसरों के जीवन में अशान्ति पैदा करते हैं या अन्य कोई विघ्न डालते हैं तो कोई न कोई हमसे भी वैसा ही करेगा। हम सब

भगवान के बच्चे हैं। भगवान अपने सभी वत्सों को समान रूप से प्यार करता है। यदि हम उसके बच्चों को परेशान करेंगे तो हम उसके प्यार से वंचित रह जाएंगे। किसी की भी बनी को न बिगाड़ो अन्यथा तुम्हारी बनी भी बिगड़ जाएगी। कई लोग ईर्ष्या वश या बदले की भावना वश दूसरों के निर्मल जीवन में विघ्न डालते हैं। वे तन्त्र-मन्त्र का भी प्रयोग कराते हैं

**भगवानुवाच याद रखें - जो आत्माएँ मास्टर सर्वशक्तिवान के नशे में रहती हैं, विघ्न-समस्याएँ उनके पास आ नहीं सकती। वास्तव में जब हम साधारण संकल्पों में रहते हैं तो हम समस्याओं का निर्माण करते हैं। भगवानुवाच है कि समस्याएँ और कुछ भी नहीं कमजोर मन की रचना है।**

परन्तु ऐसा करने वालों को यह नहीं भूलना चाहिये कि ऐसा ही कोई तुम्हारे साथ भी करेगा।

याद रहे पवित्रता हमारा सुरक्षा कवच है। इस बल को बढ़ाते चलें तो जीवन निर्विघ्न रहेगा। पवित्रता अपनाकर पुनः छोड़ देना, क्रोध, लोभ व अहंकार के वश रहना या पुनः व्यसनों के वश हो जाना अर्थात् अपने सुरक्षा कवच को स्वयं छिन्न भिन्न कर लेना है और इसका अर्थ है विघ्नों का आह्वान करना।

कर्म बन्धनों के कारण भी अनेक विघ्न आते हैं। परन्तु इन विघ्नों में यदि स्थिति न बिगड़े तो विघ्न सहज ही टल जायेगा। माँ-बाप को युवा बच्चों की ओर से भी विघ्नों का सामना करना पड़ता है। कहीं बच्चे उन्हें मारने लगते हैं तो कहीं वे बुरे संग में फंसकर उनके नाक में दम कर देते हैं। इस समस्या को भी प्यार से, शुभ-भावनाओं से व स्वमान की स्थिति द्वारा दूर करना चाहिए।

स्वयं जितने सरल होंगे, विघ्न भी उतने ही सरल हो जाएंगे। इसलिए अपनी नेचर को सरल बनायें। अर्थात् सदा हल्के रहें। कुछ

बातों को स्वीकार करके चलें। तथा बड़ी बातों को छोटा करना अपना स्वभाव बनायें। साथ ही साथ रोज जो भी बातें आयें, उन्हें जल्दी खत्म करके आगे बढ़ें।

जो स्वयं अड़ियल होकर रहते हैं, बातें भी उनके मार्ग में अड़ जाती हैं। जिद्दी नेचर का त्याग करें, दृढ़ संकल्प धारण करें। दोनों एक ही नहीं हैं। जिद्द एक बुराई है और दृढ़ता महानता है। मन को दृढ़ करें, बातों को पकड़कर न बैठें। भगवानुवाच ... तुम बाप की याद में मग्न रहो तो तुम्हारे लिए सोचने का काम भी बाप करेगा। जहाँ

भी किसी के जीवन में विघ्न अधिक होते हैं तो देखने में यही आता है कि वे योग-अभ्यास पर ध्यान नहीं देते। व्यर्थ व बाह्यमुखता में सदा रहते हैं। अथवा उनमें कहीं न कहीं अपवित्रता रहती है या पुण्य कर्म का अभाव रहता है। कईयों के विघ्न भरे जीवन में जब उन्हें राय दी कि सब कुछ एक तरफ रखकर, हल्के होकर या मन के बोझ शिव बाबा पर अर्पित करके चार घण्टे योगाभ्यास, स्वमान व ज्ञान-अध्ययन में तीन मास तक रहें और जब उन्होंने ऐसा किया जो जीवन निष्कंटक हो गया।

सत्य तो यही है कि ईश्वरीय शक्ति के आगे विघ्न ठहर नहीं सकते। कई लोगों के उलझे हुए कोर्ट केस स्वमान व योग बल से जल्दी ही ठीक हो गये। कईयों को स्टडी में मिलने वाली असफलता स्वमान से सफलता में बदल गई। योग-युक्त रहने से लम्बे समय से चली आ रही शत्रुता समाप्त हो गई। लम्बे समय की बीमारियां भी टिक नहीं पाई इस आध्यात्मिक उपचार के समक्ष। बस योग की शक्ति को बढ़ायें। कम से कम चार घण्टे स्वयं को अवश्य दें। समस्या तो बड़ी यही है कि मनुष्य समस्याओं में तो बहुत समय देता है, परन्तु वह स्वयं की स्थिति को महान बनाने में समय नहीं देता।

पहचानें अपनी योग की शक्ति को। भगवानुवाच याद करें - तुम्हारे पास शक्ति है हर संकल्प को पूर्ण करने की। बस संकल्प शक्ति को बढ़ायें।

तो आइये अपनी योग-शक्ति के द्वारा सर्व विघ्नों को नष्ट करके निर्विघ्न जीवन का सुख लें। विघ्न चाहे कैसा भी हो, आया है तो जायेगा अवश्य। यह न भूलें कि विघ्न आया विघ्न विनाशक के पास, भस्म होने के लिए। प्रतिदिन सबेरे उठकर पांच-पांच बार इन स्मृतियों का तिलक लगाया करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं विघ्नों से अधिक शक्तिशाली हूँ, मैं विजयी रहूँ, मैं विघ्न विनाशक हूँ और सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। ऐसा करने से आपके वाइब्रेशन्स बहुत पावरफुल हो जाएंगे और आप विघ्नमुक्त हो जाएंगे।



**इन्दौर (ओम शान्ति भवन)** वरिष्ठ पत्रकार ब्र.कु.कमल दीक्षित जी को 'लाइफ टाइम अचीवमेंट जर्नालिज्म अवार्ड' देकर सम्मानित करते हुए म.प्र.के गृहमंत्री उमाशंकर गुप्ता



**च्वाईस पैलेस कॉलोनी** शिवरात्री पर ध्वजारोहण करते हुए रिटायर्ड डी.एस.पी.भ्राता नरवले, अनीता जोशी, ब्र.कु.रक्षा एवं ब्र.कु.अर्चना



**कालाखेत**। ब्रह्माकुमारी गीतापाठशाला के उदघाटन पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात समाज सेवी अत्मन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मधु बहन



**डौंडी लोहारा**। शोभायात्रा का उदघाटन करते हुए ब्र.कु.सीमा, पिछड़ा वर्ग आयोग सदस्य देवेन्द्र जायसवाल, राजेन्द्र पारख, मंडल अध्यक्ष दीपचंद भंसाली, फारेस्ट अधिकारी मूलचंद शर्मा जी एवं ब्र.कु.चन्द्रलता



**केलोट (इन्दौर)**। शोभायात्रा का शुभारंभ करते हुए मध्य प्रदेश कस्त्रुबा ट्रस्ट के सदस्य गुलाबसिंह मस्करा, ब्र.कु.कुसुम, ब्र.कु.पिंकी, ब्र.कु.लीलाधर एवं अन्य



**सेमरा बाजार**। अशोक यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.पूमन